Research scholar: Abdul Hasim
Supervisor: Prof. Hemlata Mahishwar
Department: Hindi
Title: Hindi Dalit Aatmakathaon Mein Pratirodh Ka Swar

संक्षिप्त शोध सार

प्रतिरोध मानवीयता के पक्षधरता में खड़ा सबसे मुखर अस्त्र है. प्रतिरोध किसी एक क्षेत्र अथवा अनुशासन की विशेषता नहीं है अपितु सभ्यता एवं संस्कृति के विकास का मूल तत्त्व भी है. शोध अध्ययन में प्रतिरोध की भूमिका का विवेचन दलित साहित्य के संदर्भ में किया गया है. दलित आत्मकथाएँ किस प्रकार प्रामाणिक आनुभविक आधार पर दलित चेतना का प्रसार कर रही हैं और दलित समाज में प्रतिरोध को विकसित कर रही हैं यह शोध-अध्ययन इसी संकल्पना का विस्तृत विवेचन करते हुए नए परिर्वतनों को रेखांकित करता है. दलित विमर्श में केवल अस्मिता की चर्चा नहीं की जाती बल्कि समाज में मौजूद सभी स्थापित सत्ताओं के विरुद्ध जाग्रति का समर्थन भी करती हैं. केवल और केल्व अस्मिता के आइने में दलित चेतना धूमिल पड़ने लगता है इसलिए प्रतिरोध के प्रवृत्तिगत विवेचना में दलित चेतना के सभी आयामों को समाहित किया जा सकता है.

दलित आत्मकथाएँ दलित साहित्य की प्रतिनिधि विधा मानी जाती है. आत्मकथाओं में दलित जीवन की सामूहिकता अभिव्यक्ति होती है इसलिए दलित समुदाय आत्मकथाओं के माध्यम से दलित सार्वभौमिकता के नए आख्यान को भी आमंत्रित करता है. प्रतिरोध की चर्चा केवल संघर्ष के स्तर पर नहीं है अपितु प्रतिरोध दार्शनिक अर्थ को भी प्रतिपादित करता है. दलित समुदाय को शोषण के जिस दंश को झेलने के लिए विवश किया गया वह समाज और साहित्य में लंबे समय तक अभिव्यक्ति के स्तर पर उपेक्षित था. दलित आत्मकथाएँ इसी उपेक्षा का प्रतिरोध भी हैं. छद्म वैचारिकताओं एवं छद्म प्रगतिशीलता का भी विरोध यह आत्मकथाएँ करती हैं. दलित आत्मकथाओं की पहली सार्थक अभिव्यक्ति मराठी साहित्य में व्यक्त हुआ और उसके बाद हिंदी पट्टी में दलित आत्मकथाएँ लिखी जाने लगीं.

हिंदी में दलित आत्मकथाओं का इतिहास बहुत पुराना नहीं है किंतु कम समय में हिंदी में भी दलित आत्मकथाओं ने अपनी सार्थक पहचान बनाई है. हिंदी दलित आत्मकथाओं ने हिंदी पट्टी में धार्मिक जकड़न और वर्ण-व्यवस्था के कुचक्र पर बहुत तीखा प्रहार किया है. दलित आत्मकथाओं अमानवीयता, शोषण और रूढ़ियों के माध्यम से दलित जीवन के अन्तर्विरोध को भी सामने लाने का कार्य भी किया है. दलित आत्मकथाओं में दलित आंदोलनों की भाव-भूमि भी दिखती है. दलित चेतना

के निर्माण के इन्हीं कारकों ने दलित साहित्य का विकास किया है. यही चेतना दलित आत्मकथाओं में भी दिखाई देता है.

शोध अध्ययन में दलित साहित्य में प्रतिरोध के विभिन्न आयामों कि चर्चा करते हुए, जिनमें राजनीतिक प्रतिरोध, सांस्कृतिक प्रतिरोध एवं धार्मिक प्रतिरोध आदि का विश्लेषण विवेचन करते हुए सामाजिक जड़ता के खिलाफ़ उद्बुद्ध दलित प्रतिरोध के महत्त्व को रेखांकित किया गया है. इस शोध अध्ययन में अतीत, वर्तमान और भविष्य के काल क्रमिक दलित चेतना को समझने का प्रयास भी किया गया है. समकाल में विमर्शों के उभार का बड़ा कारण यही है कि साहित्य एवं अध्ययनों पर भी सवर्ण और शक्तिशाली विचारधारा के लोगों का कब्जा है, दलित अथवा अन्य विमर्श प्रतिरोध के माध्यम से ही इस शक्ति तंत्र को ध्वस्त करने के लिए संकल्पबद्ध हैं. इस अध्ययन में इन्हीं बिन्दुओं का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है.